'A'

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 796

Unique Paper Code : 12051201

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Aadikal Evam Madhyakal)

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi (DSC-2)

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिन्दी साहित्येतिहास लेखन में काल-विभाजन की समस्या पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

हिन्दी साहित्येतिहास लेखन परम्परा में नामकरण की समस्या पर प्रकाश डालिए।

2. आदिकाल की विभिन्न परिस्थितियों का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

रासो साहित्य की प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

3. भक्तिआंदोलन के उद्भव और विकास का मूल्यांकन कीजिए। (15)

अथवा

कृष्णभक्ति काव्यधारा की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

4. रीतिकाल के नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिये।

(15)

अथवा

रीतिमुक्त काव्यधारा की प्रवृत्तियों का विश्लेषण कीजिये।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणियाँ लिखिए :

(5+5+5)

(i) भक्तिकाव्य का दार्शनिक आधार

(ii) सूफी साहित्य

(iii) सगुण रामभक्ति काव्यधारा

(iv) रीतिकालीन वीरकाव्य

(v) रीतियुगीन परिवेश एवं परिस्थितियाँ

13/6/25

[This question paper contains 4 printed pages]

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **6464** **I**

Unique Paper Code : 2052101201

Name of the Paper : हिंदी कविता : सगुण भक्ति काव्य एवं रीतिकालीन काव्य

Name of the Course : **बी० ए० (विशेष) हिंदी** – DSC

Semester : II

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न–पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए : 3×9=27

(क) बन बाग उपबन बाटिका सर कूप बापीं सोहहीं।
नर नाग सुर गंधर्व कन्या रूप मुनि मन मोहहीं।।
कहुँ माल देह बिसाल सैल समान अतिबल गर्जहीं।
नाना अखारेन्ह भिरहिं बहुबिधि एक एकन्ह तर्जहीं।।

P.T.O.

अथवा

कौन हो कित कूं चले कित जात हो केहि काम जू ?
कौन की दुहिता बहू कहि कौन की यह बाम जू।।
एक गाँउ रहो कि साजन मित्र बन्धु बखानिये।
देश के परदेश के किधौं पंथ की पहिचानिये।।

(ख) गोकुल सबै गोपाल-उदासी।
जोग-अंग साधत जे ऊधो ते सब बसत ईसपुर कासी।
यद्यपि हरि हम तजि अनाथ करि तदपि रहति चरननि रसरासी।
अपनी सीतलताहि न छाँडत यद्यपि है ससि राहु-गरासी।।
का अपराध जोग लिखि पठवत प्रेम भजन तजि करत उदासी।।
सूरदास ऐसी को बिरहिन माँ गति मुक्ति तजे गुनरासी ?

अथवा

घाम घरीक निवारियै, कलित ललित अलि-पुंज।
जमुना-तीर तमाल-तरु-मिलित मालती-कुंज।।
उन हरकी हँसि कै इतै, इन सौंपी मुसकाई।
नैन मिलैं मन मिलि गए, दोउ मिलवति गाइ।।

(ग) पहलें अपनाय सुजान सनेह सौं क्यों फिरि तेह कै तोरियै जू।
निरधार अधार दै धार-मँझार दई गहि बाँह न बोरियै जू।
घनआनँद आपने चातिक कों गुन-बाँधिलैं मोह न छोरियै जू।
रस प्याय कै ज्याय बढ़ाय कै आस बिसास मैं यौं बिष घोरियै जू।।

अथवा

इंद्र जिमि जंभ पर बाडव सु अंभ पर,
रावन सदंभ पर रघुकुल राज है।
पीन बारिबाह पर संभु रतिनाह पर,
ज्यौं सहस्रबाहु पर राम द्विजराज है।
दावा द्रुम-दंड पर चीता मृग-झुंड पर,
भूषन बितुंड पर जैसे मृगराज है।
तेज तम अंस पर कान्ह जिमि कंस पर,
यौं म्लेच्छ बंस पर सेर सिवराज है।।

2. सुन्दरकाण्ड के आधार पर हनुमान के बुद्धि कौशल को समझाइए। 15

अथवा

हिंदी रीतिकाव्य के विकास में आचार्य केशवदास की भूमिका पर विचार कीजिए।

3. भ्रमरगीत के आधार पर सूरदास के विरह काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

पदों के आधार पर बिहारी के काव्य की समीक्षा कीजिए।

4. रीतिमुक्त काव्य में घनानंद का स्थान निर्धारित कीजिए। 15

अथवा

वीररस के कवि के रूप में भूषण का विवेचन कीजिए।

5. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी कीजिए : 2×9=18

(i) सुन्दरकाण्ड में सीता की मनोदशा

(ii) सूरदास की भाव तरलता

(iii) केशवदास का आचार्यत्व

(iv) बिहारी का शब्द चयन

(v) घनानंद का विरह

(vi) भूषण का ओज काव्य

***

17/6/25

[This question paper contains 2 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **6497** **I**

Unique Paper Code : 2052101202

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihas (Adhunik Kal)

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi-DSC-5**

Semester : II

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

Instructions for Candidates :

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. आधुनिक हिंदी साहित्य के विकास में भारतेंदु का महत्व प्रतिपादित कीजिए। 18

अथवा

हिंदी पत्रकारिता और खड़ी बोली आन्दोलन में महावीर प्रसाद द्विवेदी की महती भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

2. हिंदी उपन्यास की विकास-यात्रा का विवेचन कीजिए। 18

अथवा

हिंदी नाटक विधा की विकास-यात्रा पर प्रकाश डालिए।

3. उत्तर छायावादी कविता की प्रवृत्तियों का विवेचन कीजिए। 18

अथवा

नई कविता की काव्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

4. समकालीन कविता की मुख्य विशेषताओं की विवेचना कीजिए। 18

अथवा

हिंदी साहित्य में दलित विमर्श के विभिन्न आयामों का परिचय दीजिए।

5. हिन्दीं दो पर टिप्पणी लिखिए : 9+9=18

(क) नवजागरण एवं भारतेंदु

(ख) संस्मरण

(ग) प्रगतिवाद

(घ) नवगीत

(ङ) स्त्री विमर्श

***

This question paper contains 3 printed pages]

17/6/25

Roll No. | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **6527**

Unique Paper Code : **2052101203**

Name of the Paper : **Hindi Nibandh Evam Anya Gadya Vidhaein**

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi-DSC**

Semester : **II**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. किन्हीं दो गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10+10=20

(क) यहाँ तक हमने सामान्य रीति पर जातीय उन्नति और अवनीति के नियम कहे। पर खूबी नियमों की किसी एक मुख्य जाति पर लगाने से और उनका पूरा-पूरा असर पर दिखलाने में है। हम समझते हैं कि सबसे उत्तम उदाहरण हमको अपनी ही जाति पर लगाने के अतिरिक्त और कहाँ मिलेगा। बहुत आदिकाल से प्रारंभ कर हम जब से इस जाति को लक्ष्य करते हैं तो उस विभेदक गुण का बीज पाते हैं और उसका नाम मननशीलता ही रखेंगे।

अथवा

मनुष्य की प्रकृति में शील और सात्विकता का आदि संस्थापक यही मनोविकार है। मनुष्य की सज्जनता या दुर्जनता अन्य प्राणियों के साथ उसके संबंध या संसर्ग द्वारा ही व्यक्त होती है।

P.T.O.

यदि कोई मनुष्य जन्म से ही किसी निर्जन स्थान में अपना निर्वाह करे तो उसका कोई कर्म सज्जनता या दुर्जनता की कोटि में न आएगा। उसके सब कर्म निर्लिप्त होंगे। संसार में प्रत्येक प्राणी के जीवन का उद्देश्य दुःख की निवृत्ति और सुख की प्राप्ति है।

(ख) गाँधीजी के असहयोग आंदोलन और चरखा-अभियान से अनेक उदारवादी विचारक चिन्तित हो गये थे। वे भारत और ब्रिटेन का संबंध तोड़ने के पक्ष में न थे। वे ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर भारत को 'डोमीनियन' या अर्द्ध-उपनिवेश बनाने का स्वप्न देख रहे थे। रवीन्द्रनाथ राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के नये उभार का समर्थन न करके पूर्व और पश्चिम को सांस्कृतिक धरातल पर मिलाने का प्रचार कर रहे थे।

अथवा

दिल्ली, लखनऊ, इलाहाबाद से पटना तक के कितने ही रेडियो कवि सम्मेलनों में हम साथ-साथ काव्य पाठ करते रहे थे। मैं उन्हें खूब डूबकर सुनता था, चाहता था : बंद खिड़कियाँ, दरवाजे पर पड़े मोटे रंगीन पर्दे—सब इस ऐसी ताजा हवा के झोंकों से हिलने-झूलने लगे। मेरी कच्ची ललक की मायूसी न हुई। हाँ, यह एहसास बेशक हुआ कि विवेक स्थिरता लाता है। रस की छलकन मशहूर है। अज्ञेय का विरस, शांत लेखन अपनी अलग अहमियत रखता है।

2. 'जातियों का अनूठापन' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। 15

अथवा

निबंध के तत्त्वों के आधार पर 'आचरण की सभ्यता' की समीक्षा कीजिए।

3. 'करुणा' निबंध का प्रतिपाद्य लिखिए। 15

अथवा

'भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या' की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

4. 'नये संघर्ष' में चित्रित निराला के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

'सदाचार का ताबीज' शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।

5. शास्त्रीजी ने अज्ञेय को एक नये ही रूप में पाठकों के समक्ष रखा है। स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' का प्रतिपाद्य लिखिए।

6. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए : 5,5

(क) राम विलास शर्मा का साहित्यिक परिचय

(ख) 'आचरण की सभ्यता' की भाषा-शैली।